जीवन जीने की कला दादी जी से सीखो

ब्रह्माकुमार गोलक,
शान्तिवन

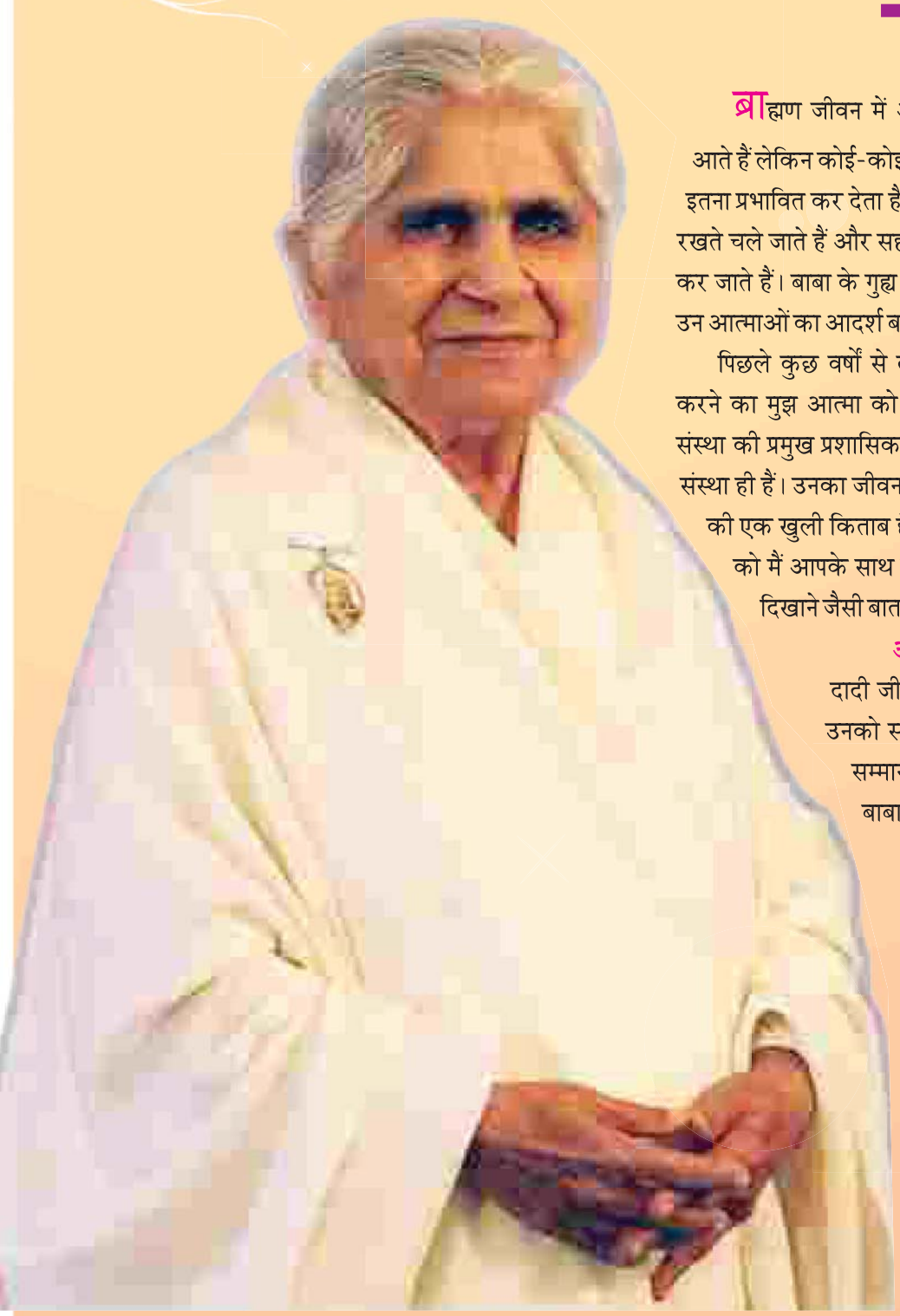

ब्राह्मण जीवन में अनेक आत्माओं के संबंध में हम आते हैं लेकिन कोई-कोई आत्मा का जीवन हमारे जीवन को इतना प्रभावित कर देता है कि हम भी उनके कदम पर कदम रखते चले जाते हैं और सहज ही अपनी श्रेष्ठ मंज़िल को प्राप्त कर जाते हैं। बाबा के गुह्य ज्ञान को व्यवहारिक स्वरूप देने में उन आत्माओं का आदर्श बहुत अनुकरणीय है।

पिछले कुछ वर्षों से दादी जानकी जी की पालना प्राप्त करने का मुझ आत्मा को परम सौभाग्य मिला है। दादी जी संस्था की प्रमुख प्रशासिका होने के साथ-साथ स्वयं भी एक संस्था ही हैं। उनका जीवन ईश्वरीय साधना और सिद्धि प्राप्ति की एक खुली किताब है। उनके साथ के कुछेक अनुभवों को मैं आपके साथ बाँट रहा हूँ जो कि सूर्य को दीपक दिखाने जैसी बात है –

आत्म-सम्मान से भरपूर

दादी जी आत्म-सम्मान से भरपूर हैं। कोई उनको सम्मान दे अथवा न दे, वे स्वयं को सम्मान देने की कला में माहिर हैं इसलिए बाबा सदा उनका सम्मान करते हैं।

बाबा की शिक्षा का साकार स्वरूप

स्व-चिन्तन और स्व-परिवर्तन उनका विशेष लक्ष्य है। कोई करे अथवा न करे, वे अपने इरादों की पक्की हैं। उनके स्लोगन हैं, 'अपनी घोट तो नशा चढ़े' व 'चेरिटी बिगिन्स एट होम।' दादी जी बाबा की शिक्षा का साकार

स्वरूप हैं, हम सबके लिए अनुकरणीय हैं।

निश्छल प्यार की मूरत

कहते हैं, प्यार ही जीवन है और जीवन ही प्यार के लिए है। हमारी दादी जी प्यार की मूरत हैं। उनका प्यार बाबा से है और बाबा ही उनका जीवन है। दादी जी सिर्फ बाबा को प्यार करती हैं और सबको प्यार देती हैं। प्रीत बाबा से लेकिन प्रीत की रीत सबसे निभाती हैं। किसी से कुछ भी प्राप्त करने की चाहना उनमें नहीं है। न वस्तु, न व्यक्ति, न गुण, न अवगुण अपितु इन सबसे परे होकर सबको निश्छल प्यार देना ही उनका कर्म है। न चाहत है, न किसी बात से आहत हैं। गंगा की अविरल धारा जैसी हैं हमारी दादी जी।

समदृष्टि

दादी जी के मन में किसी के प्रति कोई भी प्रकार का भेदभाव नहीं है। सब मेरे बाबा के बच्चे हैं, मेरे भाती हैं। ज्ञानी-अज्ञानी, देशी-विदेशी आदि में कोई अन्तर नहीं है। इस प्रकार आत्मीय भाव से सदा व्यवहार करना और सबको आगे बढ़ाना उनकी रग-रग में समाया हुआ है।

सच्चा दिल

सच्चाई, दादी जी के जीवन का मूलमंत्र है। सच्चे दिल से सबकी सेवा कर, सर्व को सच्चा बनाती हैं। इस आधार से दादी जी ने विश्व में सच्ची आत्माओं को अपना सेवा साथी बनाया है। सच्चे दिल से दिलबर बापदादा के दिल में सदा समाई हुई हैं। सच्चाई-सफाई को आत्मा की पूँजी समझ, खजानों को जमा करने में दादी माहिर हैं। सच तो बिठो नच – बाबा का यह मंत्र उनके जीवन का संगीत है।

एकनामी और एकॉनामी

दादी जी एकनामी और एकॉनामी की बेमिसाल मूरत हैं। यज्ञ साधनों को अपने प्रति कम से कम यूज़ करती हैं और सबको भी ऐसा करने को प्रेरित करती हैं। वे सदा कहती हैं कि साधनों को बाबा की सेवा में यूज करो। साधन के बजाय साधना द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने का उदाहरण हमारी दादी जी हैं। यज्ञ के बेगरी पार्ट के समय विदेश में जाकर विशाल सेवा का साम्राज्य स्थापन करने की प्रेरणा-स्रोत हमारी दादी जी ही हैं। बाबा-बाबा का नाम जपते-जपते सारे जग को आपने जगा दिया। काँटों के जंगल में कल्प-वृक्ष लगाकर सबको मनवांछित फल खिलाया – यह तो बाबा के नाम की कमाल और हमारी दादी की कमाल है। है ना बिना कौड़ी बादशाह।

विश्वकल्याणी

बेहद की वैराग्यवृत्ति और सर्व का कल्याण हो – यह उनका मुख्य ध्येय है। हर संकल्प में विश्व की आत्माओं का कल्याण समाया है। नज़रों से बाबा के प्यार और शक्ति की वर्षा, मन में सर्व आत्माओं के उद्धार की भावना और हाथों में विश्व सदा समाया हुआ रहता है। उनका हर कर्म अन्य आत्माओं के लिए उदाहरण है। यही उनका विश्व-कल्याणी स्वरूप है।

सदा स्टूडेन्ट लाइफ

पढ़ाई, सिर्फ पढ़ाई। वह भी चारों सब्जेक्ट्स की। सवेरे से रात तक पढ़ना है, सीखना है और सिखाना है, यह उनकी अपनी धुन है। उनको लगता है कि जो मुझको मिला है, वह दूसरों को भी मिले, कोई वंचित रह न जाये।

अथक सेवाधारी

ज्ञान-सेवा या यज्ञ-सेवा के बिना दादी जी रह नहीं सकती। चाहे शारीरिक तकलीफ हो तो भी सेवा से अपने को कभी अलग नहीं करती हैं।

विचार सागर मंथन

दादी जी ऊँचे और श्रेष्ठ विचारों की धनी हैं। सदा ईश्वरीय ज्ञान के चिन्तन एवं सबके साथ उसको शेयर करने में बिजी रहती हैं। विचार सागर मंथन सीखना हो तो दादी जी से सीखो।

पालना देने का अनूठा तरीका

मिलनसार और कुशल व्यवहार से दादी जी दूसरों को

अपना फ्रैण्ड बना लेती हैं। उनकी बात हालचाल पूछते-पूछते शुरू होती है, उसके बाद आपसी विचारों की लेनदेन और ज्ञान की चर्चा। फिर उसे बाबा की तरफ इशारा करती हैं। इस प्रकार की पालना से वह आत्मा बाबा के ज्ञान को सहजता से स्वीकार कर सेवा में एवं पुरुषार्थ में आगे बढ़ जाती है। यह है दादी जी की विज़डम। दूसरों में ज्ञान का बीज डालकर उन्हें स्वावलंबी बनाने की यही विधि है। पहले अंगुली पकड़कर चलाती हैं, जब आत्मा चलने लग जाये तो ठूंगा लगाकर मुक्त आसमान में उड़ा देती हैं। यह उनकी पर्सनल पालना का तरीका है।

दया और क्षमा की मूरत

दया और क्षमा दादी जी के दो अस्त्र हैं जिनका प्रयोग कर माया के वशीभूत आत्माओं को, मनमत और परमत की भूलभूलैया में फँसी हुई आत्माओं को दादी जी सहज ही निकाल लेती हैं। जब दूसरी आत्मायें उसे ठुकराती हैं या नाउम्मीद समझकर उससे किनारा करती हैं, उस समय दादी जी उन्हें क्षमा कर आगे बढ़ाती हैं, ठोकर खाने वाले को ठाकुर बना देती हैं।

वरदानीमूर्त

हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है, सब अच्छा है, यज्ञ अच्छा चल रहा है और अच्छा ही चलता रहेगा – ये बाबा के वरदानी बोल सदा दादी जी की स्मृति में रहते हैं। बापदादा द्वारा मिले हुए वरदानों के शब्द सदा उनके कानों में गूंजते रहते हैं। अपनी शक्ति की बजाय बाबा के वरदानों को अपने पुरुषार्थ एवं कर्म में वे ज्यादा यूज़ करती हैं। इससे स्वयं की शक्ति कम खर्च होती है जिससे वे अपने को सदा ऊर्जावान महसूस करती हैं, कभी थकती नहीं हैं। बाबा के वरदानों पर निश्चय से वे सदा निश्चिन्त और फिकर से फ़ारिग रहती हैं। जब हम कभी कोई समस्या लेकर उनके पास जाते हैं, उनके ये वरदानी बोल सुनकर हम अपने को हल्का महसूस करते हैं। सर्व समस्याओं का समाधान बाबा के वरदान हैं और ड्रामा की भावी है। ज़िम्मेदार होते हुए भी बाबा को अपना सब भार सौंप देती हैं। करनकरावनहार अपना कार्य कर रहा है और करा रहा है, मैं तो निमित्त हूँ, इस नशे में रहती हैं। स्वयं और कार्य को बाबा के हवाले कर देती हैं। कर्म करने की इस विधि से सहज ही सर्व सिद्धियाँ मिलती हैं।

निर्बन्धन बनाने की युक्ति

कार्य व्यवहार में अलौकिक जीवन का नशा और बाबा से प्राप्त सर्व खजानों की खुशी में रहकर संबंध निभाना, इससे हम बंधनमुक्त रहेंगे। इससे लौकिक वालों की दृष्टि भी हमारे प्रति बदल जायेगी। ये हमारे नहीं, ईश्वर के मैसेन्जर्स हैं, ये जग के साथ-साथ हमारे भी कल्याण के निमित्त हैं, वे लोग उसी ऊँची भावना से देखेंगे। ऐसी युक्ति सिखाकर आत्माओं को निर्बन्धन और निर्विकारी बनाती हैं।

धैर्य की प्रतिमा

दादी जी धैर्य की प्रतिमा हैं। किसी भी बात या परिस्थिति में विचलित नहीं होती हैं। अगर कोई आत्मा विपरीत या अशुद्ध संस्कार के वशीभूत होकर नाउम्मीदवार बन जाती है तो उनके प्रति निरंतर शुभभावना रखकर पहले से भी अधिक प्यार तब तक देती हैं जब तक वह आत्मा अपने को परिवर्तन नहीं कर लेती, इस विधि में दादी जी सदा ही सफल रही हैं।

सर्व को सम्मान देना

सम्मान देना दादी का कर्म और धर्म है। छोटे-बड़े सर्व का आदर-सत्कार दिल से करती हैं। यज्ञ में कोई भी प्रकार की सेवा करने वाले को रिटर्न देना नहीं भूलती हैं। किसी न किसी रूप से स्वयं द्वारा अथवा अन्यों के द्वारा उसका सम्मान कर, रिटर्न दे ही देती हैं।

सदा एक्टिव और एक्यूरेट

दादी जी सदा एक्टिव और एक्यूरेट हैं। कोई भी सेवा में अपना योगदान देना नहीं भूलती। सेवा के लिए सदा अपने

को ऑफर करती हैं। वह भी दिखावा या कामचलाऊ रूप से नहीं अपितु एक्यूरेट रीति से करती हैं जिसके कारण बाबा सदा उनको आफरीन देते हैं। साथ-साथ एक्टिव होकर अपना कार्य स्वयं करना पसन्द करती हैं। दूसरों से सेवा लेना या सेवा कराना, यह उन्हें पसंद नहीं है। दूसरों से सेवा लेना वह जैसे कि बोझ समझती हैं। अगर कोई दूसरा उनकी सेवा करता है तो उसे सदा अपने से आगे रखती हैं।

निरहंकारिता

इतनी बड़ी संस्था की प्रमुख होते हुए भी वे कभी उस नशे में रहकर कोई कार्य नहीं करती और न ही अपने को मुख्य समझती हैं। सेवा करने वालों को अपने से आगे रखकर, स्वयं उनके पास जाकर, उनकी महिमा करती हैं एवं उनकी सेवाओं की सराहना करती हैं। सेवासाथियों से कुशल मंगल पूछने के लिए उनके सेवास्थानों या उनके कमरे तक पहुँच जाती हैं। पूछने पर कहती हैं, यह तो मेरा फर्ज है। बाबा वतन से हमारा हालचाल पूछने आते हैं तो मैं यहाँ ही अपने भाई-बहनों को पूछने आ गई तो क्या हुआ! ये है उनकी नम्रता और निरहंकारिता जिसके आगे दुनिया झुकती है।

जो करना है, अभी करना है

दादी जी के मन में न तो अतीत का सोच चलता है और न ही भविष्य की कोई चिन्ता रहती है। उनके दिल में रहता है कि जो करना है, अभी करना है। उनका कहना है, जो बीत गया, उसका परिणाम या फल वर्तमान है और जो मैं अभी कर रही हूँ, उससे मेरे भविष्य की प्रालब्ध बनेगी। बीती बातों से सीख लेकर, वर्तमान के श्रेष्ठ कर्म से भविष्य बनाना मेरे हाथ में है। अभी मुझे सब सफल करना है, कल किसने देखा। अभी का सफल हुआ ड्रामा में नूंध हो गया। कल पर रहने वालों को काल भी आँख दिखाता है। भाग्यविधाता भाग्य बाँट रहा है, जितना लूटना है, लूट लो, अपनी झोली भर लो। अब भाग्यविधाता भगवान हमारा भाग्य बना रहा है, फिर धर्मराज हिसाब माँगेगा। 😊

ज्ञानामृत महिमा अमित

ब्रह्माकुमार गोपाल प्रसाद मुद्गल, डीग (भरतपुर)

ज्ञानामृत का आ गया स्वर्ण जयन्ती वर्ष।
इसीलिए चहुँ ओर है हर्ष-हर्ष अति हर्ष।।

बाँट रहा यह ज्ञान का अमृत चारों ओर।
सारा जग सुख पा रहा जिसका ओर न छोर।।

ज्ञानामृत जो पढ़ रहा वह हो रहा निहाल।
कलियुग में भी आ गया उसका स्वर्णिम काल।।

ज्ञानामृत रंग जो रंगा बँधा न वह संसार।
आत्म-ज्ञान उसको हुआ, पहुँचा पहली पार।।

ज्ञानामृत महिमा अमित, को कर सके बखान।
जिसने इसका फल चखा, हुआ गुणी इन्सान।।

ज्ञानामृत के ज्ञान से मिटा घोर अज्ञान।
नशा ज्ञान का चढ़ गया, मिला बाप का ज्ञान।।

ज्ञानामृत पढ़कर हुए मन के शुद्ध विचार।
खानपान भी शुद्ध है, हुआ मधुर व्यवहार।।

ज्ञानामृत का प्रकाशन होते, हो गए वर्ष पचास।
शक्ति और आनंद का हुआ सुखद अहसास।।

ज्ञानामृत में बढ़ रहा जन-जन का विश्वास।
जो जन मन से पढ़ रहा, पाता अति उल्लास।।